# अरविन्द कुमार त्रिपाठी
# द्वारा
# पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन






ग्रामीण देवता रीति रिवाज
**Village Deities Customs**

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

| | |
|---|---|
| अध्याय शीर्षक | ग्रामीण देवता रीति रिवाज |
| सर्वाधिकार | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| आइ एस बी एन/ **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| प्रकाशक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक<br>ग्राम – अछरौन्ड,<br>बान्दा – 210 001<br>उत्तर प्रदेश |
| मूल्य | निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना |
| सन्स्करण | प्रथम, 01 अप्रैल 2020 |
| आवरण/मुखपृष्ठ | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| शब्द – संयोजन | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| मुद्रक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| सन्दर्भ/साभार/सौजन्य | अध्याय **Reference** देखे |

| | |
|---|---|
| **Chapter Heading** | **Village Deities Customs &Traditions** |
| **Copyright @** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| **Publisher** | **Arvind Kumar Tripathi**<br>**Village - Achharaund**<br>**Banda - 210 001**<br>**Uttar Pradesh** |
| **Price** | **Free, Circulate to Friends** |
| **Edition** | **First, 01 April 2020** |
| **Cover Main** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Word Compositor** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Printer** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Reference/ Gratitude/ courtesy** | **Peruse Chapter - REFERENCE** |

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – बान्दा क्षेत्र के प्रमुख ग्रामीण देवताओं का संक्षिप्त वर्णन

## बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रमुख ग्रामीण देवता

गांव देहातों में स्थानीय स्तर पर तरह–तरह के देवता पूजे जाते हैं और उनकी मूर्तियां या स्थान मन्दिर आदि बना दिए जाते हैं जो कि बहुत छोटे–छोटे आकार में होते हैं और कुछ 6 फीट गुणे 6 फीट के भी नहीं है। कुछ देवी देवता नीम, बरगद, पीपल के नीचे कुछ ईट पत्थर इकट्ठा करके, उनके ऊपर अगर कोई उकेरी हुई अथवा अनगढ़ पत्थर है तो उसको रखकर अथवा गांव की नदी से छोटे बड़े पत्थरों को जिनमें भगवान की आकृति देखी जा सकती है, को लाकर रख दिया जाता है। कुछ पत्थर जो गांव के लोगों के द्वारा पर्यटन, तीर्थ यात्रा के दौरान जो तीर्थ स्थान से लाए जाते हैं, उनको भी घर में जगह न होने के कारण गांव के बाहर या तालाब के ऊपर के किनारे पेड़ के नीचे रखे मिलेगे। अगर कोई समृद्ध व्यक्ति है तो वह एक छोटा सा मन्दिर बना देगा और ग्रामीणों द्वारा उसमें रख दिए जाते हैं। मन्दिर कुछ हिन्दू धर्म के अनुसार हैं और कुछ अनार्य प्रथा के हैं। बहुत थोड़े ही भूत प्रेत और उनसे सम्बन्धित है। कोई कोई देवता किसी विषय, स्थान या प्रान्त में माना जाता है और उसकी पूजा अन्य स्थानों पर नहीं होती है। ग्रामीण क्षेत्र में देवताओं का स्थान का व मुख्य विवरण नीचे दिया गया है व आगे दिया गया है।

शौर्य व सदाचार, भूत–प्रेत, ग्राम देवता आदि की पूजा यहां के लोग जीवन का विशेष गुण है। वीरता और जनसेवा केवल गायी या बखानी नहीं जाती बल्कि उसे देवत्व की प्रतिष्ठा दी जाती है और पूजा की जाती है। इसका प्रमाण यहां के लोक देवताओं में मिलता है। हरदौल, कारस देव, और अन्य इसी तरह के वीर व्यक्तित्व हैं जिन्होंने मानव होकर भी देव की गरिमा प्राप्त की है। अपने इलाके – क्षेत्र के आसपास, गांव के बुजुर्ग ने कोई अगर लोकसेवी इतिहास बनाया है तो वह सिद्ध बाबा, खैर बाबा, बेलदार बाबा, इसी तरह के नामों से पूजे हो जाता है और उसका चबूतरा लोक की आस्था का केन्द्र बन जाता है।

क्षेत्र के देहातों में कई देवता और उनकी मूर्तियों या स्थान मन्दिर आदि पूजा जाते हैं। इनमें से कई एक हिन्दू धर्म के और कई अनार्य प्रथा के हैं और कुछ ही केवल भूत प्रेत और अन्धविश्वास से सम्बन्धित हैं। कोई कोई देश का किसी विशेष स्थान या प्रान्त में माना और पूजा जाता है। आवश्यक नहीं कि वह दूसरे स्थान पर भी पूजा जाए।

मन्दिर तथा दीवालों में अन्तर होता है। प्रायः मन्दिरों में शिखर या गुम्बद तथा गर्भ ग्रह होता है। गर्भ ग्रह के आगे ढके हुए स्थान पर जगमोहन या दालान होता है, गर्भ ग्रह के आगे और जगमोहन से पहले पन्डित जी के बैठने का स्थान होता है और वहां से भी प्रवचन करते हैं। दालान में भक्त बैठकर कीर्तन करते हैं। तारा दिवाला एक सपाट छत का मन्दिर होता है, यह किसी घर के काफी भीतर भी होता है। मन्दिरों के बाहर मन्दिर के निर्माता के सामर्थ्य अनुसार बाग, बगीचा, तालाब, कुण्ड भी होते हैं, यह आकार में काफी बड़ा भी होता है किन्तु दिवाला में चौकोर छोटा कमरा और उसी के अन्दर एक देवता की मूर्ति जिसे ग्रामीण लोग आते जाते, नहा कर आते समय या इसी तरह खेत जाते वक्त हाथ जोड़ लेते है। मन्दिरों में पूजा–अर्चना, भगवत अर्चना, आरती के निर्देशित समय होते हैं।

महिलाओं से उस चीजों की अपेक्षा की जाती है जो पुरुष नहीं कर सकता या करना नहीं चाहता। महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक होती है। बधाई पूजन, कजलियां बाकना व खोटना, जवारा बोने, विसर्जित करने आदि में इनकी दिलचस्पी होती है। धार्मिक उत्सव में इन का संगीत गायन और लोकनृत्य में पर्याप्त भागीदारी होती है। कथित रूप से निम्नलिखित जाति की स्त्रियों में मेहतरानी, मालिन कहारिन और अन्य आदि की भूमिका समाज के 16 सन्स्कारों में बराबर की होती है, फिर भी कुछ लोग छुआछूत का व्यवहार करते ही हैं। पेयजल के लिए व्यक्तिगत कुओं, सार्वजनिक पनघट ही सहारा है। दोपहर के समय पानी लाने के लिए पनघट पर एकत्रित होकर, गांव घर की सूचनाओं का आदान–प्रदान एक महत्वपूर्ण संचार व्यवस्था है। कुए पर चल रहे पंछरा या रहट के जल से, शरीर में पीली या काली मिट्टी लगाकर (पीली मिट्टी –मुल्तानी मिट्टी) स्नान करना दिनचर्या में शामिल है। अगर यह सुविधा उपलब्ध नहीं तो डोर–बाल्टी से कुऐं या सार्वजनिक पनघट से पानी खींच कर ताजे जल का स्नान सुख प्राप्त होता है। जमीन के नीचे पानी होने की वजह से जाड़ों में इनको पानी गुनगुना महसूस होता है जबकि गर्मियों में शीतलता प्रदान करता है। हर पखवाड़े पर या माह में 1 दिन, बेसन या तेल बेसन का उबटन लगाकर स्नान करती हैं। रीठा, रीठा शिकाकाई या आंवला रीठा शिकाकाई के जल से सिर धोती हैं। कपड़े धोने के लिए भी रीठे का जल प्रयोग किया जाता है। आधुनिकता के दौर में आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार साबुन का प्रयोग भी बढ़ता जा रहा है। बाल ठीक करने के लिए ककई/कंघा का उपयोग होता है जो कि आधुनिकता के दौर में खत्म होती जा रही है। जानवरों के सीन्ग से या फिर लकड़ी की पट्टी से कंघी बनाई जाती है, जिसे यहां की भाषा के अनुसार ककई कहते हैं। इसके दांते महीन और मोटे दोनों तरह के होते हैं, जो बालों में काढ़ती हैं। सिर से जूं निकालने के लिए व अन्य कई कार्यों में उपयोग महत्वपूर्ण है। एक महिला, दूसरी महिला के सिर में तेल लगा कर जब एक दूसरे की चोटियां गून्थतीं हैं तब

सहकार साकार हो जाता है। सामान्यता इलाके के अनुसार सरसों का तेल उपयोग किया जाता है लेकिन नारियल का तेल पन्सारी की दुकान से खरीदा जाता है।

स्नान ध्यान से निवृत्त होकर, गांव के पूजा घर या गांव के दिवालों अथवा मन्दिर में नंगे पैर जा कर पूजा करना आदि, शन्कर भगवान के चबूतरे पर जल चढ़ाना, हनुमान जी या देवी जी की मठिया में जल चढ़ाना तथा माथे पर चंदन की टिपकी/बिंदी लगाना आम बात है। महिलाओं द्वारा हनुमान चालीसा या हनुमान की पूजा निषेध है। ऋतुमती स्त्रियों द्वारा भी पूजा करना निषेध है या माना गया है। महिलाएं सन्ध्याकाल में घर के पूजा घर अथवा मन्दिरों में या देवताओं के चबूतरा पर आटे के दीप बनाकर, उन्हें सरसों के तेल से जलाना पुण्य मानती हैं। घर के भीतर ''तुलसी चौरा'' पर प्रातःकाल में जल दान और सन्ध्या में दीपदान पुण्य माना गया है। लाभकारी वनस्पतियों के पोषण के लिए यह दिनचर्या का अंग बन गया है।

घर के आंगन में उपस्थित तुलसी के पत्ते/पत्र तुलसी पत्र प्रतिदिन भोजन के प्रथम थाल में व प्रत्येक भोज्य पदार्थ में डालकर, ठाकुर जी को भोग लगाया जाता है। यह भोग्या प्रसाद परिवार के सभी सदस्यों को बान्टा जाता है। घर के सामने या मोहल्ला पड़ोस में पीपल के वृक्ष, अगर हैं, तो उनके नीचे भगवान शिव का चबूतरा होगा ही, जिस पर महिलाएं सांयकाल को दीपदान करने जाती हैं। किसी क्षेत्र में, अगर अमावस्या है और वह भी अगर सोमवार को पड़ती है तो उसे सोमवती अमावस्या बोला जाता है। सोमवती अमावस्या को पीपल की 108 परिक्रमा लगाकर और प्रत्येक परिक्रमा में कोई भोज्य पदार्थ चढ़ाकर उसे ब्राह्मण को दान में देती हैं। मान्यता है कि इससे मनोकामना पूर्ण होती है। कुंवारी बालिका है तो आटे के दीपक शिवलिन्ग पर प्रत्येक सन्ध्या में अर्पण करना शुभ मानते हैं।

लोक में देवता कई तरह के होते है। भारत देश में विभिन्नता में भी एकता है। इसी तरह बान्दा व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में भी अनेक प्रकार के लोग रहते है और अलग अलग प्रकार के सैकडों प्रकार के पूजन करना यहाँ की परम्परा है।

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार– ''वेद और लोक की कोटियों के आधार पर वैदिक देवता और लोक देवता के दो वर्ग बनाये गये है। उनके अनुसार वैदिक देवता टकसाली व पद प्रतिष्ठा में बहुत ऊचें है। जब कि दूसरे छुटभैये देवता है मुख्यतः उनका संबन्ध आदिम जातियों से है या फिर उनकी परम्परा लोक या लोकजीवन से है।''

प्रत्येक इंसान किसी ना किसी अभाव से पीड़ित रहता है और उससे छुटकारा पाने की आशा में वह किसी भी तरह का प्रयत्न करता है। जब वह सभी तरह से निराश हो जाता है तो वह देवताओं की शरण में जाता है यहां पर मानसिक सन्तुष्टि प्रसाद के रूप में अवश्य प्राप्त होती है।

यह आवश्यक नहीं की जो देवता एक गांव या कस्बे में पूजित हुआ हो, वहीं दूसरे गांव या कस्बे में भी पूजित हो। लेकिन हर काम करने से पहले कोई ना कोई एक देवता ऐसा आवश्यक है जिसकी पूजा की जाए।

विचारकों के अनुसार देवताओं का वर्गीकरण 3 भागों में किया जाता है।

ग्राम देवता
लोक देवता
स्थान देवता

बांदा के अछरौड गांव में निम्न देवता उपलब्ध है– संकटा देवी जो गांव के बीच में है, बिम्बिया दाई, पथुरिया दाई, भिलोरे दाई, सट्टी सट्टा, अहिरानी दाई, सिमरिया दाई, मैकासुर/महिषासुर, बकला वीर बाबा, झाड़े पारे बाबा, माड़ा देवी डाडिन में है। गाव में इसके अलावा और बहुत सारे स्थान है जो गांव वालों के द्वारा पूजित हैं।

ग्राम–देवता

गांवों में अनेक देवी–देवताओं की पूजा प्रचलित है, इनको हम ग्राम–देवता के नाम से जानते हैं। इन ग्राम–देवता की पूजा शन्कर, कृष्ण और राम से कहीं अधिक ग्रामीण जनता करती है। इन ग्राम देवताओं के कोई मन्दिर नहीं होते हैं। किसी छोटी सी मढ़िया में अथवा किसी वृक्ष के नीचे चबूतरे पर इनकी स्थापना की जाती है। कुछ लोग अपने कुल देवता का छोटा सा चबूतरा या तो अपने घर के पास अथवा अपने खेत या बगीचे में बनाते है। यहाँ के ग्राम देवी–देवताएँ– घटौटिया देव, नट बाबा, मसान, पीरबाबा, भुइयां बाबा, भैरव बाबा, हरदौल, मरही देवी, शीतला

देवी, चिककुटिहाई आदि देवी–देवताओं की मान्यता है। इन देवी–देवताओं के गीत बैसाख तथा अगहन मास की अमावस्या को रात्रि जागरण कर गाये जाते हैं।

ग्राम देवताओं में खेरमाता, ठाकुर बाबा, बेलदार बाबा, खाती बाबा, महतर बाबा, कोरी बाबा आदि आदि भी है।

लोकदेवता

सामान्यतः यह बहादुर व्यक्ति, राजा रानियों के द्वारा किए गए अच्छे कार्य, लोक कल्याण में राजाओं के द्वारा किए गए कार्य और इसी तरह के अन्य लोगों के द्वारा प्रतिष्ठित या किसी ने अपनी माता–पिता या किसी बाबा दादा के नाम से अगर कोई पेड, मन्दिर या शाला बना दी है, तो कुछ समय पश्चात वह ग्राम में देवता के रूप में शामिल हो जाता है।

लोक देवता और लोक देवियां लोक द्वारा स्वीकृत देवता है, जबकि वैदिक देवता एक विशिष्ट वर्ग या संप्रदाय द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं। हरदौल, दूला देव, मैकासुर, हीरामनदेव, कारसदेव लोक देवताओं में सम्मिलित है।

स्थान देवता

लोक में देवता कई तरह के होते हैं, आवश्यक नहीं कि एक गांव में पूजा जाने वाले देवता दूसरे गांव या कस्बे में भी पूजित हो। स्थान देवता में घटोइया बाबा, भेड़िया बाबा आदि शामिल है।।

बुन्देलखण्ड में प्रत्येक क्षेत्र में लोक देवता एवम् स्थान देवता की पूजा की जाती है। लोक देवता वह देवता है जो लोक कल्याण करें। इसी भावना को लेकर लोक देवता की पूजा की जाती है। यह लोक द्वारा मान्य और प्रतिष्ठित होता है।

लोक देवताओं और लोक देवियों को निम्न वर्ग में रखा जा सकता है।

| | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रकृति परक देवता | वृक्ष, भूमि, पर्वत, नदी, पवन, सूर्य, चन्द्र आदि। |
| 2 | अनिष्टकारी देवता | अग्नि, सर्प, भूत, प्रेत, आँधी, मृत्यु आदि। |
| 3 | आदिवासियों के देवता | बड़ा देव, ठाकुर देव, नारायण देव, धनसेन देव आदि। |
| 4 | स्थान परक देवता | गाँव की देवी, खेरमाई, मिड़ोइया, घटोइया, पौरिया बाबा आदि। |
| 5 | जाति परक देवता | कारसदेव, ग्वालबाबा और गुरैयादेव(अहीरों के), मसानबाबा (तेलियों के) भियाराने(काछियों के), गोंडबाबा आदि। |
| 6 | अतिप्राकृत देवता | यक्ष, गंधर्व, भूत, राक्षस या पानव, नाग आदि। |
| 7 | स्वास्थ्य परक देवता | ग्राम देवी, खेरमाई, भिड़ोइया(खेत की मेड़ के देवता) घटोइया/घाट के देवता,पौरिया बाबा आदि। |
| 8 | अर्थ यह समृद्धि परक | मणिभद्र कुबेर, लक्ष्मी, नाग आदि। |
| 9 | विवाह परक देवता | पार्वती या गौरी गणेश, दूला देव, हरदौल, आदि। |
| 10 | शक्ति परक देवता | शिव, दुर्गा, काली, हनुमान, चंडिका, भैरों देव आदि। |
| 11 | वरदायी देवता | शिव, इंद्र, वासुदेव, राम, शारदा माई, दशारानी आदि। |
| 12 | कुल देवता | गोसाई बाबू, सप्त मातृकाएं, खुरदेव बाबा आदि। |
| 13 | संतानपरक देवता | रक्कस बाबा, बीजासेन, षष्ठी देवी, बेइया माता आदि। |
| 14 | विघ्नहरण देवता | गणेश, पितृदेव, संकटा देवी आदि। |

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

| | |
|---|---|
| 1 वृक्ष | 1 प्रकृति परक देवता |
| 2 भूमि | 1 प्रकृति परक देवता |
| 3 पर्वत | 1 प्रकृति परक देवता |
| 4 नदी | 1 प्रकृति परक देवता |
| 5 पवन | 1 प्रकृति परक देवता |
| 6 सूर्य | 1 प्रकृति परक देवता |
| 7 चन्द्र आदि। | 1 प्रकृति परक देवता |
| 8 अग्नि | 2 अनिष्टकारी देवता |
| 9 सर्प | 2 अनिष्टकारी देवता |
| 10 भूत | 2 अनिष्टकारी देवता |
| 11 प्रेत | 2 अनिष्टकारी देवता |
| 12 आँधी | 2 अनिष्टकारी देवता |
| 13 मृत्यु आदि | 2 अनिष्टकारी देवता |
| 14 बड़ा देव | 3 आदिवासियों के देवता |
| 15 ठाकुर देव | 3 आदिवासियों के देवता |
| 16 नारायण देव | 3 आदिवासियों के देवता |
| 17 धनसेन देव आदि। | 3 आदिवासियों के देवता |
| 18 गाँव की देवी | 4 स्थान परक देवता |
| 19 खेरमाई | 4 स्थान परक देवता |
| 20 मिड़ोइया | 4 स्थान परक देवता |
| 21 घटोइया | 4 स्थान परक देवता |
| 22 पौरिया बाबा आदि | 4 स्थान परक देवता |
| 23 कारसदेव | 5 जाति परक देवता |
| 24 ग्वालबाबा(अहीरों के) | 5 जाति परक देवता |
| 25 गुरैयादेव(अहीरों के) | 5 जाति परक देवता |
| 26 मसानबाबा(तेलियों के) | 5 जाति परक देवता |
| 27 भियाराने(काछियों के) | 5 जाति परक देवता |
| 28 गोंडबाबा आदि | 5 जाति परक देवता |
| 29 यक्ष | 6 अतिप्राकृत देवता |
| 30 गंधर्व | 6 अतिप्राकृत देवता |
| 31 भूत | 6 अतिप्राकृत देवता |
| 32 राक्षस या पानव | 6 अतिप्राकृत देवता |
| 33 नाग आदि। | 6 अतिप्राकृत देवता |
| 34 गाँव की देवी | 7 स्वास्थ्य परक देवता |
| 35 खेरमाई | 7 स्वास्थ्य परक देवता |
| 36 भिड़ोइया(खेत की मेड़ के देवता) | 7 स्वास्थ्य परक देवता |
| 37 घटोइया/घाट के देवता | 7 स्वास्थ्य परक देवता |

| | |
|---|---|
| 38 पौरिया बाबा आदि। | 7 स्वास्थ्य परक देवता |
| 39 मणिभद्र | 8 अर्थ यह समृद्धि परक |
| 40 कुबेर | 8 अर्थ यह समृद्धि परक |
| 41 लक्ष्मी | 8 अर्थ यह समृद्धि परक |
| 42 नाग आदि | 8 अर्थ यह समृद्धि परक |
| 43 पार्वती | 9 विवाह परक देवता |
| 44 गौरी गणेश | 9 विवाह परक देवता |
| 45 दूला देव | 9 विवाह परक देवता |
| 46 हरदौल आदि। | 9 विवाह परक देवता |
| 47 शिव | 10 शक्ति परक देवता |
| 48 दुर्गा | 10 शक्ति परक देवता |
| 49 काली | 10 शक्ति परक देवता |
| 50 हनुमान | 10 शक्ति परक देवता |
| 51 चंडिका | 10 शक्ति परक देवता |
| 52 भैरों देव | 10 शक्ति परक देवता |
| 53 शिव | 11 वरदायी देवता |
| 54 इंद्र | 11 वरदायी देवता |
| 55 वासुदेव | 11 वरदायी देवता |
| 56 राम | 11 वरदायी देवता |
| 57 शारदा माई | 11 वरदायी देवता |
| 58 दशारानी | 11 वरदायी देवता |
| 59 गोसाई बाबू | 12 कुल देवता |
| 60 सप्त मातृकाएं | 12 कुल देवता |
| 61 खुरदेव बाबा | 12 कुल देवता |
| 62 रक्कस बाबा | 13 संतानपरक देवता |
| 63 बीजासेन | 13 संतानपरक देवता |
| 64 षष्ठी देवी | 13 संतानपरक देवता |
| 65 बेइया माता | 13 संतानपरक देवता |
| 66 गणेश | 14 विघ्नहरण देवता |
| 67 पितृदेव | 14 विघ्नहरण देवता |
| 68 संकटा देवी | 14 विघ्नहरण देवता |

उपरोक्त देवी देवताओं आदि का, सबका अपना–अपना अलग–अलग महत्व है। निश्चित समय एवम् परिस्थिति के आधार पर, इनका पूजन अर्चन किया जाता है। कुछ निश्चित कुछ अनिश्चित समय या फिर दोनों पर किए जाते हैं। कुछ की त्यौहार या घर में किए जाने वाले कार्य के अनुसार पूजा की जाती है जैसे विवाह मृत्यु बच्चे का पैदा होना आदि

एक लोक प्रसिद्ध उक्ति है–

भक्ती द्रविड़, उपजी लाये रामानन्द

जिसका आशय यह है कि भक्ति का मूल द्रविड़ों में है। यह सिद्ध हो चुका है कि मूर्तिपूजा और अवतार की कल्पना द्रविड़ों से, वृक्ष पूजा और बलि कोलों से तथा तंत्र–मंत्र किरातों से आये है।

इस जनपद में भक्ति का स्त्रोत गोड़ों द्वारा प्रवाहित किया गया था। उनके बड़े देव महादेव के रूप में देवों के देव बन गये। ठाकुरदेव गाँव भर के ठाकुर हो गये और खेरमाई गाँव भर की खेर देवी बन गयी। अतः यह कहा जा सकता है कि किसी एक जनपद की जंजीरों में लोकदेवत्व को जकड़ा नहीं जा सकता है।

पूजा हेतु उपयोग में आने वाली सामग्री

दही, चावल, नारियल सिन्दूर, पान, दूध, फूल, मलीदा, बताशा, बकरी का बच्चा, मुर्गी, कपड़ा, रोटी, चूड़ी, हवन, दिया/चिराग, शराब, रोटी, हल्दी और चावल आदि।

प्रमुख ग्रामीण देवताओं की सूची

| | | |
|---|---|---|
| 1 | अहिरानी दाई | |
| 2 | कारस देव | लोक देवता |
| 3 | कोरी बाबा | ग्राम्य देवता |
| 4 | खाती बाबा | ग्राम्य देवता |
| 5 | खैर माता/खेरे की माता/खेड़ापति | ग्राम्य देवता |
| 6 | गुरैया बाबा | |
| 7 | गोंड बाबा | |
| 8 | ग्वाल बाबा | |
| 9 | घटोइया | स्थान देवता |
| 10 | झाड़े पारे बाबा | |
| 11 | ठाकुर बाबा | ग्राम्य देवता |
| 12 | दूला देव | लोक देवता |
| 13 | नट बाबा | |
| 14 | नागदेव | |
| 15 | पथुरिया दाई | |
| 16 | पोंरिया बाबा | |
| 17 | बकला वीर बाबा | |
| 18 | बरम देव | |
| 19 | बगराजत | |
| 20 | बुन्देला बाबा | |
| 21 | बिम्बिया दाई, | |
| 22 | बेलदार बाबा | ग्राम्य देवता |
| 23 | भेडिया बाबा | स्थान देवता |
| 24 | भिलोरे दाई | |
| 25 | भियाराने | |
| 26 | मढ़ई देवी | |
| 27 | महादेव | |

| | | |
|---|---|---|
| 28 | महावीरन महावीर अथवा हनुमान | |
| 29 | महतर बाबा | ग्राम्य देवता |
| 30 | मसान बाबा | |
| 31 | माड़ा देवी | |
| 32 | मिड़ोहिया | |
| 33 | मैकासुर/महिषासुर | लोक देवता |
| 34 | मंगत देव | |
| 35 | रक्शा/छींद | |
| 36 | सत्ती | |
| 37 | सट्टी सट्टा | |
| 38 | सिमरिया दाई | |
| 39 | संकटा देवी | |
| 40 | हरदौल | लोक देवता |
| 41 | हीरामन देव | लोक देवता |

महावीरन अथवा हनुमान

महावीरन या महावीर मन्दिर या हनुमान का मन्दिर या स्थान प्रत्येक गांव में होता है। यह हनुमान का ही प्रतिरूप है और इसका मन्दिर लगभग प्रत्येक गांव में अवश्य मिलेगा एक पत्थर के चौकोर पत्थर पर स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से उकेरी गई मूर्ति है जिस पर सिन्दूर लगा रहता है। एक पत्थर के चट्टी पर उनकी मूर्ति होती है जो खुले में भी रखी रहती है। हर मंगलवार को इस पर सिन्दूर लगाया जाता है। मंगल और शनिवार को नारियल, सिन्दूर और फूलों से उनकी पूजा होती है। कोई कोई मलीदा का भी भोग चढ़ाता है और अपने मनौती को पूरा करने की प्रार्थना करता है या मनौती पूरी होने पर उनकी पुनः पूजा करने आता है।

खैर माता/ खेरे की माता/ खेड़ापति

खेर खेड़ा खेरा का अर्थ एक बहुत पुराना स्थान या तो पुराना गांव जो उजड़ चुका है। वह उजड़ा हुआ स्थान जो पहले आबाद था या वर्तमान में कोई ग्राम। प्रत्येक गांव में इसकी छोटी सी मढ़िया या लाल या काले रंग की छोटी सी मूर्ति होती है। गांव का कोई एक व्यक्ति उनकी पूजा करता रहता है। कहीं इसे कोई कथित अछूत जाति का मानता है या सामान्यतया सभी जाति के लोगों के लिए है। गांव में अथवा आसपास हैजा होने पर विशेष पूजा की जाती है। एक बकरी का बच्चा अथवा मुर्गी, कपड़ा, रोटी, चूड़ी, हवन, दिया/चिराग और शराब से इसकी पूजा होती है। यह सब चीज लेकर पुजारी गांव के बाहर चौराहे पर रख देता है। कभी–कभी पूजा के बकरे का मांस बनाकर लोग खाते भी हैं। जब पूजा करने वाला यह पूजा करता है, तब गांव वाले उसकी गैर हाजिरी में उसके घर का कूड़ा झाड़कर एक सूपा में रखकर घंटा बजाते हुए गांव के बाहर जाकर फेंक आते हैं। किसी रात को अथवा सुदी द्वितीया को पूजा की जाती है जब यह पूजा की जा रही होती है या पूजा करता है तब उसके साथ गांव के गुनिया/जादूगर (गुनिया– ज्ञान वाले, दुनिया का ज्ञान, ज्ञानी, जादूगर) भी जाते हैं। गुनिया वह है जिसको खेर माता का भाव आता है। भाव आने पर वह अपना सर विचित्र रीति व तरीके से हिलाता है और मुंह से फेन/झाग निकालता है। खेती के सम्बन्ध में भी खेड़ापति की पूजा होती है।

हरदौल

हरदौल, ओरछा के राजा जुझार सिंह के भाई थे। मुख्यतः ओरछा जिले में ज्यादा प्रचलित है। ओरछा के राजा जुझार सिंह के भाई हरदौल के रानी के साथ अनुचित सम्बन्ध होने के सन्देह में राजा ने विष देकर उनको मरवा डाला था। इसके बारे में पूर्व में काफी कुछ लिखा जा चुका है। हरदौल की पूजा विवाह में अथवा वैशाख में होती है। गांव की स्त्रियां उनके चबूतरा या मडिया अथवा मन्दिर के पास जाकर तथा वहीं रोटी पका कर खाती हैं

और पूजा भी करती हैं। हरदौल की मूर्ति व घोड़ा मिट्टी से बने होते है व उसके हाथ में भाला होता है। उसका चबूतरा या मडिया अथवा मन्दिर गांव के बाहर होता है उस पर झंडा लगा रहता है जो लाल या सफेद रंग का भी हो सकता है। विवाह से दो दिन पहले स्त्रियां उनकी पूजा करके उन्हें भाई की तरह न्योता देती है।

पुनः– बुन्देलखण्ड के लोकदेवताओं में सबसे अधिक पूज्य एवम् मान्य हरदौल है। गाँव–गाँव में इनके नाम के चबूतरे बने हुए है। ओरछा नरेश वीरसिंह देव बुन्देला के पुत्र जुझार सिंह व हरदौल थे। जुझार सिंह हरदौल के बड़े भाई थे। इस राज्य में राजा के छोटे भाई को दीवान कहते थे। दीवान को भाई जुझार सिंह व रानी का अपार स्नेह प्राप्त था। भाभी के निःसंतान होने के कारण हरदौल को अधिक स्नेह करती थी। हरदौल ज्यादातर अपना खाली समय महल में ही बिताते थे। दीवान हरदौल से जलने वाले किसी चुगलखोर ने जुझार सिंह को भड़काया कि हरदौल का महलों में अधिक रहना, रानी के प्रति जनता के मन में संदेह पैदा कर सकता है। पहले तो जुझार सिंह ने इस बात को टाल दिया, लेकिन बार–बार कहने पर उनका सन्देह दृढ़तर हो गया। राजा ने अपनी पत्नी से अनुरोध किया कि तुम्हें अपने को निर्दोष साबित करने के लिए हरदौल को विषाक्त भोजन देना होगा। रानी की परीक्षा की घड़ी बड़ी ही जटिल एवम् एवम् दृढ़ थी। एक ओर पतिव्रत धर्म और दूसरी ओर पुत्रवत हरदौल। हरदौल ने अपनी मातृस्वरुपा भाभी को परीक्षा में खरा उतारने के लिए जानबूझ कर विषयुक्त भोजन ग्रहण कर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। उनका पार्थिव शरीर नही रहा लेकिन सदा के लिए अमर हो गया। उनके साथ उनका अनुचर ''मेहतर'' ने सदा की तरह उनका जूठा भोजन खा कर प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। हरदौल के चबूतरे के पास मेहतर बाबा का चबूतरा भी मिलता है।

हरदौल की बहिन कुन्जाबाई की पुत्री का विवाह था। बुन्देलखण्ड में विवाह के समय भाई के यहां ''भात'' का निमंत्रण देने की परम्परा है। बड़े भाई जुझार सिंह को बन्धु हत्या को दोष लगा हुआ था। बहिन किसको निमंत्रण दे? कुन्जाबाई हरदौल के चबूतरे पर गई और उन्हे निमन्त्रण दिया। मन ही मन अश्रुपूरित हो, कुन्जाबाई वहाँ से वापिस अपने घर लौट आई। अपनी भाँजी की शादी में, हरदौल सारी सामग्री सहित आये और उनकी छाया सभी को दिखाई दी। तभी से विवाह के शुभ अवसर पर सर्वप्रथम हरदौल लाला को आमन्त्रित किया जाता है। इस अंचल में हरदौल विशेष पूज्य है। हरदौल के साथ इनके भनेज/भान्जा दामाद ''दूलादेव'' की पूजा होने लगी।

दूला देव

ओरछा के राजा जुझार सिंह के छोटे भाई हरदौल के मित्र थे। इनका मन्दिर भी सभी गांव में होता है और यह गांव के बाहर ही बना हुआ होता है। विशेष तौर से इस क्षेत्र में कहते हैं कि कोई एक युवा वर, विवाह को जाते समय, चीते द्वारा मारा गया था या कुछ कहते हैं कि बिजली गिरने से मृत्यु को प्राप्त हो गया था। बारात रवाना होने से पहले इन देवता की सामग्री द्वारा पूजा करके प्रस्थान करते हैं और लौटकर नारियल चढ़ाते हैं। दूल्हा देव का मन्दिर गांव के पूर्व की ओर होता है और हरदौल की मूर्ति के समान घोड़े पर ही रहता है।

यह(भानेज दामाद) हरदौल व कुन्जाबाई के दामाद थे। लाला हरदौल ने अपने दामाद को बारह गाँव दहेज में दिये थे। उन गाँवों में हरदौल की पूजा नहीं होती है। दूलादेव का पूजन हरदौल के सहयोगी के रुप में होता है। दूलादेव का चबूतरा हरदौल के चबूतरे के निकट बनाया जाता है। पूजन में दूल्हे का वेष, नारियल एवम् पकवान चढ़ाये जाते है। सफेद व केसरिया या लाल रंग का झण्डा चढ़ाते है। ऐसा माना जाता है कि विवाह के पूर्व इनके पूजन करने से विवाह में विघ्न–बाधायें नहीं आती है।

रतनगिरी की माता

कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यहाँ एक मेला भरता है जिसमें अनेकों लोग मनौती मनाने के लिए आते है। देवी के पास ही कुंवर साहब का चबूतरा है। यहाँ पर मुसलमानों का युद्ध स्मारक ''हजीरा'' पास ही है। ''हजीरा'' उस स्थान को कहते हैं जहाँ हजार से अधिक मुसलमान एक साथ दफनाए गए हो। विन्सेन्ट स्मिथ ने इसे ''देवगढ़'' उल्लेख किया है जो ग्वालियर से 16 किमी दूर है।

सेवढ़ा से 13 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम की ओर रतनगढ़ नामक स्थान है जो कि दतिया जिले में है। घने जंगल के बीचों–बीच यह स्थान अत्यन्त रमणीक है। यहाँ पहाड़ी पर देवी का प्राचीन मन्दिर बना हुआ है। जिन्हें ''रतनगढ़ की माता'' के नाम से जाना जाता है। इनकी ख्याति दूर–दूर तक सिद्धपीठ के रुप में है। यहाँ सात–आठ किमी० दूरी पर देवगढ़ का किला है जो आज भी अच्छी स्थिति में है।

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

## कुंवर साहब

कुंवर साहब रतनगिरि के भाई थे। किसी भी इन्सान व पशु को सर्प द्वारा काटने पर प्रायः कुंवर साहब के नाम का बँध लगाया जाता है। जिससे विष का प्रभाव सारे शरीर पर नहीं फैलता है– ऐसा कहा जाता है। दीपावली के बाद पड़ने वाली द्वितीया के मेले को सर्प दंश वाले जानवर के ''बन्ध'' खोल/काट दिये जाते है।

## कारसदेव

बुन्देलखण्ड के प्रायः प्रत्येक ग्राम में कारसदेव का चबूतरा बना रहता है। कारसदेव एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व रखते है। ये हैयद वंशी राजा अजयपाल की शिष्य परम्परा में बताये जाते है। जनश्रुतियों के आधार पर राजा अजयपाल ने अनेक तांत्रिक अनुष्ठानों द्वारा मंत्र सिद्ध करके उसका ज्ञान अपने शिष्य कारसदेव एवम् अपने सहयोगी साथी हीरामन को दे दिया। कारसदेव का पूजन पशुरक्षा के साथ झाड़–फूंक के लिए भी किया जाता है।

## अजयपाल

सिन्ध नदी के तट पर सेवढ़ा में अजयपाल का, जंगल में एक प्राचीन स्थान स्थित है, वहाँ पर कोई मूर्ति नहीं है। उसे अजयपाल का किला समझा जाता है। यहाँ पर वर्ष में एक बार अनेकों जगहों से लोग पूजा अर्चना के लिए आते है। अजयपाल का सम्बन्ध देवी भागवत की एक प्राचीन कथा से जोड़ा जाता है। इस प्रदेश में झाड़–फूंक के कई शावर मंत्र प्रचलित है। जिनमें अजयपाल की आन धराई जाती है। ये सभी मंत्र हमेशा प्रभावकारी सिद्ध होते है– ऐसा लोग सोचते है।

## मिड़ोहिया

मन्दिर और स्थान जगह जगह बने हैं। यह सब अंधविश्वास या एक दुर्घटना हो जाने के कारण हुआ है। दुर्घटना दोबारा ना हो, उसके लिए जनता, जिसके साथ यह घटना घटित हुई थी, की पूजा करके उससे सुरक्षा का आश्वासन प्राप्त करने जाता है। मिड़ोरिया भी एक देवता है जो खेत की मेड़ का देवता है जिसकी मूर्ति नहीं होती है, परंतु खेत में कार्य करने से पहले चाहे बोना है, काटना है,मेड़ की पूजा करते हैं। सभी किसान अपने अपने मेड़ों पर इस तरह से पूजा करते हैं। दही, चावल और नारियल मेड़ पर चढ़ा कर पूजा संपन्न करते हैं। लोगों का विश्वास है कि इसको ना पूजने से वह, हवा चला कर बीज को बिगाड़ देता है अथवा खलिहान को जाते समय गाड़ी तोड़ देता है या तेज हवा चला कर पूरे अनाज को उड़ा देता है। कहीं–कहीं पत्थर या किसी पेड़ में, गांव की सीमा पर इसकी स्थापना की जाती है। रोग रक्षा के लिए भी इसकी पूजा होती है। यह गांव की सीमा का रक्षक है।

मिडोई बाबा भी देखे।

## नागदेव

श्रावण मास का पंचमी पर यह पूजा की जाती है जिसे नाग पंचमी भी कहते हैं लगभग पूरे भारत में इसे नाग पंचमी के तौर पर जानते हैं। यदि गांव में इसका मन्दिर हो तो लोग जाकर वहां पान और दूध से दीवार पर मूर्ति बनाकर लिखकर नाग की पूजा करते हैं। नाग पंचमी को नाग दर्शन शुभ होता है। नाथ लोग उस दिन पकड़े हुए नाग को सब जगह दिखाते हैं। लोग उन्हें एक दो पैसे या समयानुसार धन भी देते हैं।(यह उस समय की बात है जब एक या दो पैसे का महत्व बहुत होता था। 1रुपया अथवा सोलह आने से लेकर 1रुपया तक की धनराशि किसी भी परिवार को भरण पोषण के लिए उचित राशि होती थी।) कहीं–कहीं चट्टान पर सिन्दूर/ घी/ चन्दन/गोबर से नाग का चित्र मूर्ति बनाकर नाग पंचमी पर पूजते हैं। श्रावण में एक दिन गांव भर की स्त्रियां बाम्बी या मन्दिर के पास जाकर नाग को पूजती है और वहीं पर भोजन बनाती व भोजन करती हैं इसके अलावा कर सन्ग्रह करने वाले अमीन और लेखपाल भी कागज पर बने हुए सांप के चित्र को गांव में बांटते हैं तथा कुछ धन संग्रह करते हैं। अब वर्तमान में यह प्रथा लुप्त हो चुकी है और अमीन का संग्रह करने वाले इस प्रथा को छोड़ चुके हैं।

### गोंड बाबा

यह भी सभी गांव में होते हैं। यह कोई भी भय/ भीत /प्रीति से भरे हुए व्यक्ति को सम्बल देने का विश्वास है। गोंड बाबा का चबूतरा होता है जिस पर केवल एक पत्थर रखा रहता है और समय–समय पर लोग इसकी पूजा करते हैं।

### मंगत देव

अन्य वीर योद्धाओं की तरह इनकी भी पूजा होती है, इनके यश के गीत गाए जाते हैं। यह चंदेरी राज के एक भाई का या कायरता का या वीरता का लेकिन ज्यादा तत्व एक दहशत या दासता का है। मंगत देव एक वीर पुरुष थे। इसकी पूजा होती है तथा उनके यश के गीत गाए जाते हैं। यह चंदेरी राज्य के एक बुन्देला थे। कहते हैं कि वहां अभी तक इनका मकान है। एक समय दिल्ली के बादशाह का पड़ाव चंदेरी के तालाब पर पड़ा था और स्त्रियां तालाब में भुजरियां नहीं सिरा सकती थी तो मंगत देव ने वीरता से मार–काट, युद्ध करके रास्ता साफ कर दिया और गांव की स्त्रियों को भुजरियां प्रवाहित करने का मौका दिया। इस युद्ध में वह मारे भी गए थे तभी से उनकी पूजा होने लगी।

### पोंरिया बाबा

अन्य लोगों की तरह यह भी किसी प्राचीन समय के राजपूत का है। यह देवता किसी प्राचीन राजपूत के समय से है। उनकी यादगार में किले या मकान की पोंर में स्थापित होता है। ब्याह शादी में इसकी पूजा अवश्य की जाती है, ताकि इस तरह के कार्यक्रम में उनकी कोई रक्षा करें और आक्रान्ता मुस्लिम या कोई अन्य व्यक्ति इस शुभ कार्य को नष्ट ना कर सके। लोकोक्ति है कि यदि पोंर की पूजा ना की जाए तो यह सम्बन्धित व्यक्तियों को बीमार कर देता है

### मसान बाबा

यह तेलियों का देवता है। लोक विश्वास हैं कि यह किसी तेली बालक का भूत है। उसकी हुलिया कुछ इस प्रकार है –वह 3 फीट ऊंचा, काला रंग व बड़े–बड़े घने बालों वाला बालक है। कोई कोई तेली मसान बाबा को अपने वश में कर लेता है और वह कोल्हु पर बैठकर उसके हांकने में सहायता देता है। एक बाल मिली हुई रोटी उसका नैवेद्य है /भोजन है। बिना नैवेद्य/भोजन पाए वह उपद्रव भी करता है। इसीलिए कोल्हू में लकडी के ऊपर जहां सरसों डाली जाती है, बैठाया जाता है। सबसे ऊपर एक छोटा सा काला कपड़ा बांधा रहता है, जिसमें एक पत्थर रहता है, लोगों के अनुसार यह पत्थर कोल्हू को दबाकर रखने के लिए होता है। तेली लोग उसे मसान बाबा के के नाम से परिचित कराते हैं।

### नट बाबा

यह नट का भूत है और अन्य जातियों की तरह यह भी अहीरों का बाबा है। प्रायः अहीर जो नृत्य करते हैं, उनका देवता है। अहीर इसकी पूजा करते हैं

### छींद या रक्शा/रक्षा यह

एक जाति का प्रेत है और जंगल में रहता है। यह कुत्ता, गाय आदि के विभिन्न रूप बनाकर उसे रास्ते पर आने जाने वालों को परेशान किया करता है। बहुधा लोग जंगल में किसी स्थान पर इसकी पूजा किया करते हैं।

### मढ़ई देवी

यह हैजा की देवी है। इस रोग के होने पर शूद्र जाति के लोग गांव में शराब छिड़कते हैं और एक सूअर का बच्चा ले जाकर बलि करके, एक मुर्गा छोड़ देते हैं। उनका विश्वास है कि बीमारी मुर्गा के साथ चली जाती है।

गुरैयां बाबा

गुरैयां को लोग प्रायः गोंड की स्त्री का भूत भी मानते हैं। अहीर जाति के लोग इसको पूजते हैं व इसकी स्थापना भी करते हैं। गांव के जानवर प्राय सवेरे वही रहुनियां में एकत्र होकर जंगल में चरने को जाते हैं। इस देव को नारियल, फूल, हल्दी, और चावल से पूजते हैं।

महादेव

भारत के लगभग सभी गांवो में महादेव या शिव के मन्दिर अवश्य पाए जाते हैं। मढ़िया या चबूतरा या मन्दिर गांव के अन्दर या बाहर अवश्य मिलेंगे।

भियाराने

यह काछियों और अहीरों का देवता है। इसका चबूतरा प्रायः गांव के किनारे किसी भी दिशा में होता है। समय–समय पर गांव वाले व काछी एकत्रित होकर जात्रा लगाते हैं। उस समय किसी–किसी को भाव आया करता है और मुंह से झाग भी निकालता है।

ग्वाल बाबा

यह पुनः अहीरों का देवता है। वह अपने पशुओं की क्षेम कुशलता के लिए इसको पूजते हैं। इसका चबूतरा भी प्रायः गांव के पास ही होता है। पूजने की पद्धति लगभग एक ही तरह की है। नारियल, सिन्दूर, बताशा आदि से इन सब की पूजा की जाती है

बरमदेव/ब्रह्मदेव

यह किसी ब्राह्मण का भूत प्रेत होता है। और गौड़ तथा गुरैया की तरह इसकी पूजा होती है। सामान्यत बरगद के पेड़ और पीपल के पेड़ को ब्रह्मदेव का निवास स्थान माना गया है। ये सबसे ज्यादा पूजनीय है।

बुन्देली बाबा

यह किसी बुन्देला ठाकुर का चबूतरा है और चबूतरे पर स्थापित किया जाता है। किसी विशेष कार्य के विचार से यह पूजा जाता है।

इस प्रकार सत्ती, बगराजत आदि कितने ही देवता ग्रामीण देवताओं में शामिल है और गांव के आसपास, अन्दर, बाहर, जंगल, नदी नाले के आसपास मिलते हैं

मातृका पूजन

शास्त्रों में षोडषमातृका, सप्तधृतमातृका का उल्लेख पाया जाता है, मान्गलिक अवसर पर इनके आवाहन पूजन के मन्त्र भी है, जिनसे इनकी पूजा की जाती है। इसे मातृपूजा कहा जाता है।

मान्गलिक अवसर पर कल्याण प्राप्ति और कार्य के निर्विध्न समापन के लिए कहीं गोबर तो कहीं मिट्टी अथवा शक्कर की पुतरियां/पुतलियाँ बनाकर उनकी प्रतिष्ठा एवम् पूजा की जाती है। विवाह आदि कार्य सम्पन्न हो जाने पर इन्हें विदा किया जाता है।

कुल देवता और मातृका को मिलाकर ''माय बाबू'' की पूजा कहा जाता है। निषेधपरक अर्थ में देवी–बाबू की पूजा भी कहा जाता है। सहयोग के लिए कहा जाता है अथवा निषेधपरक अर्थ में –देवी–बाबू भी कहा जाता है। सहयोग के लिए कहा जाता है– हमारे उनके माय बाबू एक ही है। असहयोग के लिए कहा जाता है– हमारे उनके देवी बाबू अलग–अलग है।

मैकासुर

मैकासुर की पूजा बुन्देलखण्ड के ज्यादातर सभी गांवों में पशुरक्षक देवता के रूप में होती है। कंगूरेनुमा ऊँचे टीले पर इनके चबूतरे बने रहते है। मैकासुर "महिषासुर" का अपभ्रंश है। इनका पूजन प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को होता है। किसी जानवर के प्रसव/ब्याने पर सबसे पहले दूध प्रसाद रूप में चढ़ाया जाता है। इसके पश्चात् ही वह उपयोग में लाया जाता है। पशुरक्षा की प्रार्थना इन्हीं से की जाती है। इनके प्रसाद में देशी घी, सवा किलो पूड़ी का मलीदा होता है तथा इन्हें सफेद ध्वजा चढ़ाई जाती है। मैकासुर पूजन से "पशु परिवार" की विभिन्न बीमारियों से रक्षा होती हैं।

कुलदेवता

कुल में जिसकी पूजा प्राचीन काल से चली आ रही हो– वही कुल देवी या कुल देवता कहलाते है। कुलदेवता का पूजन वर्ष में मुख्यतः एक बार, सामान्यतः नौ बार होती है। अनेक सन्स्कारों में कुलदेवताओं का पूजन होता है। इस पूजन में परिवार के सदस्य ही भाग लेते है और वरिष्ठ सदस्य द्वारा पूजा की जाती है। कुलदेवता या कुलदेवी के पूजन में अविवाहित लड़कियों को सम्मिलित नहीं किया जाता है। मिट्टी की छोटी–सी चौतरियाँ उनका आसन होती है। जो एक बार बना दी जाती है तो हमेशा उनका ही पूजन होता है। उस पर फरका(कपड़ा) रखा जाता है। जिस पर कुल देवता का चित्र अन्कित किया जाता है। कुलदेवता की पूजा प्रत्येक क्षेत्र में होती है पर कुलदेवता अलग अलग होता है।

इतिहासकार वी. ए. स्मिथ चन्देलों की कुलदेवी मनियां देवी को घोषित करते है। (आरक्योलोजिकल सर्व रिपोर्ट भाग सात) में जे. डी. वैगलर की टिप्पणी है कि मनियागढ़ में एक छोटे से सादे मन्दिर के अवशेषों में हाथ में तलवार लिये हुए एक स्त्री प्रतिमा का समन्वित रूप है। वह गोड़ों के द्वारा पूजित देवी से अधिक भिन्न नहीं है (पृ 44)। स्मिथ का यह मत महोबा के मनियोदेव के आधार पर बना है। असल में, मनियागढ़ उसके मन्दिर में प्राप्त प्रतिमा के नाम पर मनियाँ देवी और महोबा के महान – सागर के किनारे स्थापित मनियाँदेव में मनियाँ नाम का सम्बन्ध बैठाया गया है। जबकि मनियागढ़ में प्राप्त देवी–मूर्तियों को ही मनियाँ क्यो न कहा जाय? फिर मनियाँ देव को मनियाँ देवी कैसे माना जाय?

परमाल रासो (16 वीं शताब्दी) एवम् जगतराज की दिग्विजय (1722–23 ई०) के प्रमाणों से सिद्ध है कि "मानियों देव" माणिभद्र यक्ष ही है, जो पारसमणि के स्वामी भी हैं।

"गजानन माता" खंगारों की कुल देवी थी। जिनकी स्थापना गढ़कुण्डार में कुण्ड के पास की गयी थी। बुन्देलों की देवी विन्ध्यवासिनी थी। किसी के कुलदेव गोसाई बाबू? कहलाते हैं। इस क्षेत्र में बाबू की पूजा भी कुलदेवता की पूजा कहलाती है। बुन्देलखण्ड में प्रत्येक जाति और वर्ग में अलग–अलग तिथियों में यह पूजन होता है। किसी के घर माघ मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया, किसी के यहाँ मार्गशीर्ष द्वितीया अथवा फाल्गुन शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यह पूजन होता हैं।

बुन्देलखण्ड का क्षेत्र शक्ति पूजक रहा है। मायमैर की पूजा भी कुलदेवी की पूजा में आती है। यह पूजा ज्यादातर घरों में देखने को मिलती है।

अन्य ग्राम देवता

गावों में अनेक धार्मिक, सदाचारी, लोक सेवीय व्यक्ति, धनाढ्य व्यक्ति हो जाते है, जिनकी मृत्यु के पश्चात उनके चबूतरे बना दिये जाते है फिर उनके जिसके चाहने वाले पुत्र, अनुयायी पूजा करते रहते है। कुछ समय पश्चात अनुयायीयों द्वारा काल्पनिक कथा कहानी चलती रहती है। इस तरह ग्रामवासियों की श्रद्धा तथा आस्था का भाव इस सीमा तक बढ़ जाता हैं कि नर–नारी उन्हें देवता मानकर पूजने लगते हैं तथा उनसे मनौतियों मनाते है। किसी भी व्यक्ति की मनौती पूरी होने पर वहाँ ध्वजायें चढ़ाई जाती हैं। चिरकाल में कुलदेवता हो जाते है।

यह देवी–देवता ग्राम्य देवता के रूप में पूजे जाते हैं। इनके नाम कहीं–कहीं जातिपरक भी मिलते हैं। जैसे बेलदार बाबा, मेहतर बाबा। कहीं इन्हें सिद्ध बाबा, खैर बाबा, खैर माता आदि नाम से भी पुकारते हैं। अनेक स्थानों पर किसी देवी के प्रतीक पाषाण की पूजा करके उसके निकट वृक्ष पर लाल या सफेद वस्त्र के टुकड़े बाँध देते हैं, उन्हें ''चिथरयाऊ देवी'' कहते है।

घटोइया बाबा

यह नदी नाले के घाट पर बना होता है। अगर नाला नहीं है, तो नदी या इसी तरह के पानी वाले स्थान पर इसकी स्थापना होती है। इसकी मूर्ति एक चबूतरे पर गोल पत्थर सी बनी होती है। इसको नारियल और फूल चढ़ाते हैं। ससुराल जाते समय स्त्रियां इसकी पूजा करती हैं, नहीं तो बीमार हो जाने का भय रहता है। वहां से निकलने वाली गर्भिणी स्त्री इसकी वन्दना भी करती है नहीं तो गर्भपात की आशंका बन रहती है, ऐसा लोकोक्ति है। भयवश ही पूजा करने को बाध्य है।

घटोईया को वरुण देवता का लोकपूजित स्वरूप माने जाता है। इनके चबूतरे नदी नालों, घाटों में या जलाशयों के निकट मिलते हैं। नदी–नाला पार करते समय बारात, वर–वधू की निर्विध्न यात्रा, मत्स्य उद्यम के लिए निकले मछुआरों की सकुशल वापिसी तथा बाढ़ के समय पड़ोसी ग्रामों की रक्षा के निमित्त इनकी पूजा की जाती है। इनके विशेष भक्तों में प्रायः वे वर्ग हैं जिनका जल से जुड़ा व्यवसाय है, जैसे मछुवारे, ढीमर तथा धोबी। किन्तु बारात निकलते समय सभी बाराती या बाढ़ के समय सभी जातियों के ग्रामवासी इनकी पूजा करते हैं। इनका झंडा सफेद होता है। प्रसाद में नारियल चढ़ाया जाता है। अनेक स्थानों पर बकरे की बलि देकर उसका मांस वहीं पकाकर खाने की परम्परा है। घटोइया

मिडोई बाबा

गाँव का सीमा को बुन्देली में मेवडा या मेड कहते है। मेड पर निवास करने वाले देवता को मिड़ोई बाबा या गेंवड़े बाबा कहते हैं। गाँव की सीमा में प्रवेश करके सकुशल कार्य संपादन करने के निमित्त गेवड़े पर इनकी पूजा की जाती है। इनके चबूतरे पर दो ईटों का त्रिकोणनुमा आकार बना होता है। सफेद झण्डा लगाया होता है। प्रसाद श्रद्धानुसार चढ़ाया जाता है। मान्यता है कि इनकी पूजा से जिस मार्ग से होकर आये हैं, उसमें साथ आई अनेक प्रेत–बाधाओं आदि का शमन होता है तथा गाँव की रक्षा होती है। आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष में सभी ग्रामवासी इनका पूजन करते. है। मिड़ोहिया भी देखें।

मनियाँ देव

महोबा के मनियादेव लोक प्रसिद्ध है। बान्दा से 55 किमी दमर महोबा चंदेल राजाओं की राजधानी होने से पूरे देश में प्रसिद्ध रहा। महोबा में चन्देल कालीन मन्दिर, दुर्ग, प्रासाद, प्रस्तराभिलेख, मूर्तियां आदि पुरामात्विक महत्व के अनेक अवशेष मिले है। लोकगाथाओं में मनियाँ देव लोकदेवता के रुप में चर्चित है। कवि जगनिक की काव्य में मनियाँ देव का वर्णन है।

प्रसिद्ध इतिहासकार वी0 ए0 स्मिथ के अनुसार महोबा के मनियाँदेव को मनियाँदेवी माना गया और उन्हें चंदेलों की कुलदेवी कहकर चंदेलों को गोड़ों का आर्यकृत वंशज सिद्ध किया गया है।

महोबा के कुल देवताओं में मनियादेव की पूजा प्रमुख है।

मेले

किसी भी प्रदेश की सन्स्कृति को वहाँ के वन, पर्वत, सरिताएं और पशु–पक्षी एवम् ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक सम्पदा पूर्णतः प्रभावित करती है। कविकुल कालीदास ने बुन्देलखण्ड को भारत के मध्य भाग में स्थित ''दशार्ण देश'' माना है। इसके नगरों व गाँवों के नर–नारी बुन्देलखण्डी बोलते हैं।

बुन्दलेखण्ड क्षेत्र की लोक सन्स्कृति के यहाँ प्रत्येक क्षेत्र में समान रुप से दर्शन होते हैं। तीज, त्यौहार, व्रत, उत्सव तथा मेले भी प्रायः एक ही ढंग के होते हैं। यहाँ पर मेलों का महत्व प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है।

मेले में ज्यादातर ग्रामीण बच्चे, स्त्री–पुरुष भारी संख्या में देखने को मिलते हैं तथा ग्रामीण बच्चे, स्त्री–पुरुष भरपूर आनन्द उठाते हैं।

बुन्देलखण्ड में मेले किसी विशेष अवसर या देव स्थान पर लगाये जाते हैं। मेले बच्चों के मनोरंजन का साधन तथा मानव जीवन को सुख, आनन्द की अनुभूति प्रदान करते हैं। मनोरंजन के ये ऐसे साधन है कि इनमें मनुष्य अपनी आन्तरिक वेदना को भूलकर खुशी में झूम उठते हैं।

बुन्देलखण्ड में अनेक त्यौहारों से सम्बन्धित (नवरात्रि, दशहरा, दिवाली, संक्रान्ति(बुड़की), कार्तिक पूर्णिमा, अक्ती, भुजरिंया, नागपंचमी आदि) मेले देवस्थानों पर उत्साहपूर्वक लगाये जाते हैं। इन मेलों ने लोकान्चल के लोक जीवन की छटा स्पष्ट रुप में दृष्टिगोचर होती है। बच्चे, बूढ़े और स्त्रियाँ पारम्परिक साज–सज्जा के साथ हंसते–गाते, नाचते–झूमते, मेलों में देखने को मिलते हैं। दूर दूर से ग्रामीण सजी धजी बैलगाडियों, साईकिल या पैदल ही आते जाते दिखाई देते है। खाद्य पदार्थों के नये–नये तरीकों से सजी दुकाने, आकर्षक खिलौने, हस्तशिल्प के अद्भुत नमूने मेले में आये लोगों का मन मोह लेते है। बच्चे अपनी जिद से मनपसन्द की चीजें खरीदने को मातापिता का मजबूर करते दिखाई देते है।

स्त्रियां अपनी गृहस्थी की वर्षभर की खरीदारी इन मेलों में करती हैं। महिलायें गुदनारी की दुकान पर गोदना गुदवाते दिखेगी तो कहीं मेंहदी की दुकान पर ठप्पे द्वारा मेंहदी लगवाते दिखेगी।

छोटे छोटे बच्चे गुब्बारे, बुढिया के बाल, जलेबी, लड्डुआ आदि ही खरीदवाते दिखेगे। भला बताशे, शक्कर के घुल्ले, ढुड़कीला/मोटे सेव/स्याव, लइया, खील, रेवडी, गट्टे, पेड़ा आदि खाये बिना भला मेले घूमने का कोई मजा है। मेले का आनन्द अधूरा है।

मेले में मनोरंजन के विशेष साधन सर्कस, जादू, शीशाघर, नौटंकी, दिलदिल घोडी, मदारी (बन्दर, भालू के नाच), झूले, हिन्डोला, लोकनृत्य आदि है। कहीं–कहीं लाठी और तलवार का शौर्य प्रदर्शन करते, दंगल का प्रदर्शन करते युवक दिखते हैं। यहाँ के प्रमुख मेले निम्न हैं –

नवदुर्गा मेला

बुन्देलखण्ड में नवदुर्गा पूजन और जवारों का मेला वर्ष में दो बार लगता है। प्रथम चैत्र माह के शुक्ल पक्ष में और दूसरा आश्विन माह के शुक्ल पक्ष में। आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की नवरात्रि को शारदीय महानवरात्रि के नाम से भी पुकारते हैं। झाँसी में पचकुइंया के स्थान पर यह मेला लगता है। इस क्षेत्र में लोग मनौती के अनुसार जवारे बो कर उन्हें नाचते–गाते हुए माँ को चढ़ाने के लिए इन मन्दिरों में लाते है। स्त्रियां पेड़े(साष्टांग दंडवत की मुद्रा में) भरकर, यात्रा पथ पूरा करती हैं। स्त्रियाँ काफी दूर–दूर से पैदल चलकर जवारे अपने सिर पर रखकर भक्ति भावना के साथ माँ के मन्दिरों में जाती हैं। जवारों के प्रसिद्ध मेले झांसी में लहर की माता, पचकुइया, शारदा देवी (बैरागढ़) संदेसुर देवी (हमीरपुर) अक्षरा देवी(सैदनगर) तथा स्कंद माता(नावली) में लगते हैं।

श्रीराम तथा केशवदास का जन्मोत्सव

ओरछा में एक विशाल मेला श्रीराम और केशवदास की जयंती (चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी) के उपलक्ष्य में लगता है। ये दोनों महोत्सव यहीं एक साथ बड़ी धूमधाम के साथ ही मनाये जाते हैं। जयन्ती के शुभ अवसर पर बुन्देलखण्ड के साहित्य–प्रेमी जन प्रसिद्ध कवि केशवदास के जन्मस्थान पर श्रद्धान्जलि अर्पित करते हैं। ओरछा भारतीय सन्स्कृति का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है। इस सम्बन्ध में केशवदास ने स्वयम् अपने काव्य में लिखा है–

वारिये नगर और ओरछे नगर पर

अछरु माता का मेला

इस प्रदेश की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ पर षट् ऋतुएँ समय–समय पर आकर प्रदेश की प्रदक्षिणा करती हैं। इन ऋतुओं के विशेष उपलक्ष्य में यहाँ पर अनेक मेले होते रहते है।

## अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड की भूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य और यहां की प्राचीन सन्स्कृति के वास्तविक दर्शन मेलों में ही होते है। यहां के रीति–रिवाज, वेश–भूषा और बुन्देली लोकगीतों का आनन्द अनुपम है। काफी समय पहले बुन्देलखण्ड में माता पिता अपने बच्चों के वैवाहिक रिश्ते यही मेलों में तय कर देते थे।

मेलों में दूर दूर से व्यापारी क्रय–विक्रय करने आते हैं। चिरौंजी, महुआ, धनिया, जीरा, मिर्च आदि का बाजार इस मेले में लगता है, तो दूसरी तरफ गाढ़ा(खादी), लूंगा, करवी, और ऊनी कम्बलों, आदि का बाजार इस मेले में लगता है। तीसरी ओर मड़ावरे जखीरा, महरौनी टीकमगढ़ आदि में निमार्ण किये गये पीतल कांसे के बर्तनों का आदि का बाजार इस मेले में लगता है। चौथी तरफ कांसे अथवा पीतल के ढले हुए कला–पूर्ण रजवाड़ी साज से सज्जित हाथी, ऊँट, घोड़ा, रथ आदि खिलौनों का आदि का बाजार इस मेले में लगता है।

पहाड़ी बालेश्वर नाथ मेला

माघ के पूर्णमासी से महाशिवरात्रि तक चलने वाला 15 दिवसीय मेला में दैनिक उपयोग की सारी सुविधाएं उपलब्ध है। लोहा, पत्थर, लकड़ी, प्लास्टिक, चीनी पोर्ट से बनी हुई वस्तुओं की बिक्री होती है। इसके आसपास के गांव– ओवरी, कुचौरम, देवल, भानपुर, नेहरा, कलवारा, पिलखीनी और दर्शन बसंतपुर तारा नदी आदि के लोग जो गांव में रहते हैं, आकर अपनी आवश्यकतानुसार चीज खरीदते हैं। पुरुष खेती के लिए फावड़ा और कृषि उपयोगी वस्तुएं जबकि महिलाएं गृहस्थी से सम्बन्धित खरीदारी करते हैं। बच्चों के लिए तो बस गुड की जलेबी ही महान है।

ब्रजराज भगत का पीपल बड़ा तालाब पर –रामसनेही, सरस्वती, ब्रजराज भगत, भगवान दास। तालाब की फोटो में सिद्धि के पास ब्रजराज पीपल की आयु करीब 70 साल पुराना

तालाब गोसाई घाट

रामरती

हरदौल राजा तालाब    कुलदेवता

बिबिया दाई    – पानी की टंकी के पास

देवली दाइ,  सुरौली

दसोली खेर,

सिमरिया दाई

मैकेसुर (मैकेश्वर) बाबा –बसे रहुनिया मोरी, गायन के रखवार।

माला देवी – डाड़िन में, लेखक के खेत के पास, प्रत्येक सोमवार को जात्रा(यात्रा) लगती है खासतौर से उनके के लिए जिनके बच्चे नहीं है।

रामरति दाई मिश्रा –   4–5 पीढ़ी पहले लगभग (2024ई में लगभग100 साल) पुराना तालाब

तालाब के बड़े शंकर जी

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

तालाब पर अवैध कब्जा

स्त्रियों का पुराना हगना स्थान, वर्तमान प्रेमी मिलन स्थल

हरदौल राजा, शादी का प्रथम निमन्त्रण पत्र चढ़ाया जाता है।

बहुत पुराना अग्रेन्जों के समय का बान्दा भरुआसुमेरपुर मार्ग–

बान्दा –कनवारा –अछरौंड़ – अछरौंड में गोसाइयों का समाधि स्थल– हरदौल राजा –दो तालाबों का मिलन स्थल– रामरति दाई( बड़े शंकर जी)– मैकेसुर (मैकेश्वर) बाबा – भरुआसुमेरपुर (अछरौंड से भरुआ सुमेरपुर 50 किलोमीटर दूर है।) अग्रेजों के समय का मुख्य रास्ता।

मैकेसुर बाबा का दिया– इन्गुवा का जंगल,

मैकेसुर में भादों की कृष्ण पक्ष की पंचमी को र्वाट(मोटी व बड़ी रोटी जो सवा किलो की होती है।) चढ़ाते हैं। असली घी में डाली गई सवा किलो की रोटी होती है। इसको महिलाएं ही बनाती है। लेकिन महिलाएं नहीं खाती हैं, साथ ही उसे गांव में भी नहीं ले जा सकती अर्थात् इनका गांव में ले जाना वर्जित है। वर्तमान में सूखी नीम के नीचे कच्चा चबूतरा (फोटो व जीआर लगी है) वर्तमान में कुछ नहीं है। हमेशा कच्चा बनाया जाता है अतः प्रत्येक वर्ष वर्षा में बह जाता है और हर साल नया बना लिया जाता है। अटल स्कूल जाने वाली सड़क के मोड पर स्थित है।

बैजनाथ पीपल, बड़ा ताला– यहां पर, मरने पर लोग घैली लगाने लगे हैं।

हनुमान मंदिर स्कूल के पास, पहले 100 साल पुराना चबूतरा था। रामदास अटैया(विश्वम्भर के बड़े भाई)रामकृष्ण के ताउ। रामदास ठाकुरिया ने इसको छवा दिया।

बिबिया दाई– अटल स्कूल को जाने वाली रोड के ठीक सामने पानी की टंकी जो अन्डर ग्राउंड भी है, के ठीक 20 मी पीछे।

दिवली दाई–

अछरौड से सिरौली सड़क पर सीधी चलते जाना है। सीधी चलते रह कर दो किलो मीटर दूर, सड़क पर कर्क नाला पुल का पार कर, बाएं तरफ मुड़ना है। वहां पर देवली दाई का मंदिर और शंकर भगवान का मंदिर है और उन दोनों के ठीक सामने हनुमान का मंदिर है। यहां के कुछ लोग हाथी रखते थे जो लोग सिरौली में रहते थे। गोसियारी गांव में मुसलमान हाथी रखते थे, उनसे किराए पर लेकर, साउथ इंडिया व महाराष्ट्र जाते थे। शीशी में पानी रखते थे व कृपा व प्रसाद स्वरुप में पानी प्रदान करते थे। अगर कोई पूछता था तो कहते थे –

सुरवलगढ़ से आए हैं, करक नदी के किनारे रहते हैं
कर्क नदी के सुरवलगढ़ के बाबा हैं, बड़े सयाने है। शीशी का पानी देते थे

दिवली दाई का मंदिर

## अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

दिवली दाई का मंदिर को दिवली नाम की स्त्री ने बनवाया जो कपसा की निवासिनी थी। आश्रम में सुरौली पाइप लाइन से, जो 200 मी दूर है, से पानी जाता है। देवली दाई में दुर्गा मंदिर है जिसे किसी देवली नाम की स्त्री ने बनवाया था। पहले यहां सुरौली नामक गांव था जो अब सुरौली खेर हो गया है। गांव हट कर थोड़ा दूर बस गया है।

देवली दाई मन्दिर के पास उरई/खसखस बहुत मात्रा में है। देवली दाई के मंदिर से अछरौंड तक भरपूर है और इस खसखस का अन्ना फाउंडेशन में तेल निकाला जा सकता है और इसकी टट्टी बनाई जा सकती है।

सिमरियादाई (दुर्गा मंदिर) ग्रिड रेफरेंस 25.52147 80.23594

ग्यासी दाई उजरेहटा से आगे बाए तरफ, दरदा गांव की तरफ है। यहां मेला भरता(लगता) है।

राम–तरी का नारा– हाई स्कूल स्कूल के पीछे राम–तरी का नारा है, नाला भी कहते हैं।

गोसाईयों का क्षेत्र –देवरी दाई, सिमरियादाई, बकाला वीर बाबा, ग्यासी दाई और उजरेहटा को सीधी रेखा से मिलाते हुए देखा जाए तो जो क्षेत्र बनता है वह गोसाईयों का क्षेत्र है।

गोसाई वाली बाबा

दाई का चित्र भी लगा हुआ है जो अछरौड गांव में स्थापित है। इसकी स्थापना चंदेल वंश के समय में है। "बीच गांव की देवी" भी इसको कहा जाता है साथ ही चंदेल वंश की देवी वहां भी स्थापित है जो विधि विधान से स्थापित की गई है। चंदेल वंश के पुरोहित बहुत विद्वान हुआ करते थे जिला पंचायत रोड केन नदी से अछरौड सिरौली चौराहे तक (अन्ना बगिया) तक गया हुआ है।

जन (खेत पर काम करने वाले मजदूर) को पहली बार जाने के लिए चने की दाल और चुपड़ी हुई रोटी दी जाती थी। रोटी को अलसी के तेल से चुपड़ा जाता था। चावल, दुहान (माठा–(मटका में कच्चे दूध को ही जमा दिया जाता था तथा मथ कर माठा/मठ्ठा बनाते हैं। इस माठे में मनमानी पानी डालते हैं, फिर भी इसको लेने के लिए लाइन लगती है।), माठा में गुड और सोंठ को मिलाकर दुहान बनाते हैं) दिया जाती था। । आषाढ़ माह के आद्रा में जन खिलाए जाते थे। किसान का घर भी यहीं खाता था। कोई जन चार महीने तो कोई जन 12 महीने के लिए काम करता था। उसे उस समय चार महीने के लिए दो बीघा जमीन और ₹1000 साल के दिए जाते थे और अगर 12 महीने के लिए काम करता है तो चार बीघा खेत और ₹25000 दिए जाते थे। वह जुताई व वहां के सारे काम में सहायता किया करता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | Beech gao ki devi Kuldevi | कुलदेवी | |
| 2 | अछरौड से बान्दा जाते केन के किनारे बड़ा पीपल पेड, एक्सप्रेस वे में काट किया | भटवारे/घाटवाले बाबा | $25^0$32-0850m $80^0$16-5530iw |
| 3 | अछरौड पंचायत घर पथुरिया दाई के बराबर में बनाया गया। पथुरिया दाई मन्दिर के साथ ही एक बड़ा तालाब बना है। | पथुरिया दाई | $25^0$32-4180m $80^0$16-0920iw |
| 4 | भिलोरे दाई मन्दिर जिस पर चौसठ योगिनी मन्दिर लिखा है। बाएं मयूर पर बैठे शनिदेव का छोटा मन्दिर है। दाएं भैरव का मन्दिर है। सभी में नई मूर्तियां जो 15 20 साल की हैं | भिलोरे दाई | $25^0$32-3410m $80^0$16-2410iw |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 5 | अछरौड पंचायत घर पथुरिया दाई ओर बने रास्ते से आगे चलने पर विशाल ईदगाह बनी है। 20 मीटर आगे भिलोरे दाई मन्दिर इससे लगा हैं व सारी जमीन ईदगाह द्वारा दबा ली है। | ईदगाह | |
| 6 | शन्कर मन्दिर जिस पर बकुलेश्वर महादेव लिखा है। | बकलाबीर बाबा | 25 31.7410N, 80 15.7880E |
| 7 | सत्ता सत्ती मन्दिर के बारे में कहा जाता है कि यह 200 साल पुराना है। मूर्ति भी काफी पुरानी है। गांव के लोगों ने उसकी मरम्मत करा दी है। इसी के बराबर एक पेडों द्वारा दबा व घिरा एक मन्दिर है। 2गुणे 2 फीट की पट्टी पर स्त्री पुरुष की मूति है। | सत्ता सत्ती मन्दिर | $25^0$32-5530m $80^0$16-0440iw |
| 8 | 2022 ई0 में बने अटल विद्यालय के पीछे एक बहुत उंचे टीला बचा है। इस पर एक हनुमान का चबूतरा बना है। हनुमान के पीछे एक करील/करियार की बहुत पुराना झाडी पेड का रुप ले चुकी है। टीला मातादीन मुखिया की बन्धी का किनारा है। डाणेन के हनुमान/झरियारे के हनुमान के नाम से भी जाने जाते है। | करियारे के बाबा | $25^0$32-7170m $80^0$15-7360iw |
| 9 | Ach mandir Bibia Dai water tanks 20250503_102304 | बिबिया दाई | 25 32.4840N, 80 15.4790E |
| 10 | Samadhi gosai tala par | गोसाई समाधि | |
| 11 | Ach mandir Hardol Raja 20250503_075946 | हरदौल मन्दिर | 25 32.4380N, 80 15.7980E |
| 12 | tala par shiv mandir by b d tripathi prachin | ब्रज त्रिपाठी शिवमन्दिर | |
| 13 | Ach mandir brijraj pipal 20250503_083911 | ब्रज त्रिपाठी पीपल | 25 32.3980N, 80 15.7110E |
| 14 | Ach mandir Maikesur baba chabootara 20250503_082157 | मैकासुर बाबा | 25 32.5930N, 80 15.5580E |
| 15 | Bnda Hist Achh Gramin Devata Kariyare baba GR Atal | करियारे बाबा | 25 32.7170N, 80 15.7360E |
| 16 | Ach mandir diuli daai suroli 20250503_104630 | दिवली दाई | 25 32.4900N, 80 15.8110E |
| 17 | मन्दिर के पीछे एक छोटे चबूतरे पर कुछ पत्थर है जिन्हे देवी माना जाता है व उन पर चूडी, महावर व स्त्रियोचित सामग्री चढाते है। सांग भी चढी है। इगुआ का जंगल चारों तरफ है। अछारौड से अटल विद्यालय की पक्की सड़क पर ढलान से पहले दाहिने तरफ 50 मीटर पर है। | हनुमान मन्दिर, अटल स्कूल | 25 32.2960N, 80 15.6770E |
| 18 | Ramrati Shankar ji 4 5 pidhi pahale | रामरती शन्कर मन्दिर | 25 32.4380N, 80 15.7980E |
| 19 | Simariya dai | सिमरिया दाई | |
| 20 | Mala Devi | माला देवी | |
| 21 | Ach mandir Hardol Raja 20250503_075959 | हरदौल राजा | 25 32.4700N, 80 15.6910E |
| 22 | Maya dev Sthan | माला देवी स्थान | |
| 23 | Gyasi dai Ujrehta Darda | ग्यासी दाई | |

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ / सौजन्य / साभार
बान्दा गजेटियर 1909
बुन्देलखण्ड विनीता पे22
फाइल बांदा हिस्ट्री पहाड़ी लोकेशन
बुन्देलखण्ड की सन्स्कृति और साहित्य – रामचरण हयारण(पृ०संख्या–68 / 61
बुन्देलखण्ड के त्योहार
इन्दिरा गान्धी नेशनल सेन्टर फोर दी आर्ट
मन्दिर तथा दिवाला टपदपजं पेज49
विनीता चित्र नाग आदि